प्रकाशक :

मुनि विनयसागर, साहित्याचार्य
अध्यक्ष सुमति सदन
कोटा (राजस्थान)

वि० सं० २०१२ ● ई० स० १९५६

मूल्य
।-)

मुद्रक
जैन प्रिन्टिंग प्रेस
कोटा (राजस्थान)

आचार्य श्री जिनविजयेन्द्रसूरिजी

को

लेखक के दो शब्द

प्रस्तुत पूजा की उपादेयता इसी से स्पष्ट है कि पूजा-साहित्य में भगवान महावीर के 'छह कल्याणक' की कोई पूजा ही नहीं थी। इसीलिये इस कमी की इस पूजा द्वारा पूर्ति की गई है।

प्रत्येक तीर्थंकर के च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान और निर्वाण ये पाँच कल्याणक तो होते ही हैं, परन्तु अन्तिम तीर्थंकर, शासन नायक वर्धमान स्वामी के छः कल्याणक हुए हैं। प्रथम च्यवन और दूसरा गर्भहरण होने से छः माने जाते हैं।

कई महाशय जो इस गर्भ-हरण कल्याणक को नीच और गर्हित होने के कारण अमङ्गल स्वरूप मानते हैं, वे लोग यह भूल जाते हैं कि स्थानांगसूत्र, समवायांग सूत्र, कल्पसूत्र, आचारांग सूत्र आदि शास्त्रों में छः ही बताये हैं। अतः उन्हें आगम साहित्य के प्रति मताग्रह के कारण मनमानापन न करते हुए शास्त्रीय मान्यता को ही स्वीकार करना चाहिये और प्रचार करना चहिए। जिन पाठकों को इस विषय में रस हो और विशेष निर्णय करना चाहते हों, उन्हें स्वर्गीय आचार्यदेव गीतार्थ-प्रवर पूज्येश्वर श्री जिनमणिसागरसूरीश्वरजी महाराज लिखित "षट्कल्याणक निर्णयः" और मेरी लिखित 'वल्लभ भारती', एव गणि श्री बुद्धिमुनिजी सम्पादित पिण्डविशुद्धि प्रकरण में मेरे द्वारा लिखित उपोद्घात देखना चाहिये।

प्रस्तुत पूजा मे कल्याणकों के अनुपात से ही ६ पूजायें रखी हैं। प्रथम पूजा में एक ढाल, दूसरी, तीसरी और पाँचवीं पूजा में दो-दो ढालें, चौथी पूजा में ३ ढाल तथा छठी पूजा में एक ढाल और एक कलश है। इस प्रकार कुल १२ ढालें हैं। इसमें रागि-

नियाँ दो शास्त्रीय-संगीत की हैं और अवशिष्ट सब वर्तमान प्रच-लित ही ग्रहण की गई हैं, जिससे गायकों को सरलता पड़े।

पूजा में क्या वर्ण्य-विषय है ? इस पर जरा गौर कर लेना समुचित ही होगा।

प्रथम पूजा में नयसार के भव में सम्यक्त्व प्राप्ति से २६ भवों का संक्षेप उल्लेख किया गया है। आषाढ़ शुक्ला ६ हस्तोत्तरा नक्षत्र में वर्धमान का जीव दशम देवलोक से च्युत होकर माहणकुण्ड ग्राम निवासी, कोडाल गोत्रीय विप्र ऋषभदत्त की सहचरी जालंधर गोत्रीया देवानन्दा की कुक्षि में उत्पन्न होता है। देवानन्दा १४ स्वप्न देखती है, अपने स्वामी से इसका फल पूछती है और स्वामी के मुख से 'पुत्ररत्न' फल श्रवणकर हर्षित होती है।

दूसरी पूजा में आश्विन कृष्णा त्रयोदशी को इन्द्र की आज्ञा से हरिणगमेषी देव द्वारा गर्भ परिवर्तन होता है। अर्थात् महावीर का गर्भ क्षत्रियकुण्ड के अधिपति सिद्धार्थ की पत्नी त्रिशला की कुक्षि मे आता है, और त्रिशला का पुत्रीरूपा गर्भ देवानन्दा के गर्भ में आता है। त्रिशला १४ स्वप्न देखती है। सिद्धार्थ से एव स्वप्न लक्षण पाठकों से फल श्रवण कर हर्षित होती है। राज, धन-धान्यादि की वृद्धि होने से वर्धमान नाम रखेंगे ऐसा जनक और जननी संकल्प करते हैं।

गर्भावस्था में जननी को पीड़ा न हो, अतएव गर्भ की चलन क्रिया त्यागकर, महावीर स्थिर बनते हैं। माता को सकल्प-विकल्प के साथ अतिशय दुःख होता है। महावीर यह जानकर प्रतिज्ञा करते हैं कि अहो! माता-पिता का इतना वात्सल्य! अतः इनके जीवित रहते हुए मैं दीक्षा ग्रहण नहीं करूँगा।

तीसरी पूजा में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को वर्धमान का जन्म होता है। दिक्कुमारियाँ और इन्द्रों द्वारा जन्मोत्सव मनाने के पश्चात् सिद्धार्थ राजा उत्सव मनाता है। वर्धमान नाम-करण किया

जाता है। आमलिकी क्रीड़ा में देवों द्वारा 'महावीर' नाम रखा जाता है। बड़े भाई नन्दिवर्धन और बहिन सुदर्शना के साथ क्रीड़ा करते हुए समय व्यतीत करते है। युवावस्था में यशोदा नामक सामन्त कुमारी से पाणिग्रहण होता है। प्रियदर्शना नामक पुत्री होती है। माता-पिता के देहावसान के पश्चात् भाई नन्दि-वर्धन से दीक्षा ग्रहण करने की अनुमति चाहते हैं, किन्तु भाई और भाभी के आग्रह पर साधक के रूप में साधना करते हुए दो वर्ष रहना स्वीकार करते हैं।

चौथी पूजा में लोकान्तिक देवताओं द्वारा समय सूचित करने पर, वर्षीदान देकर, प्रिया यशोदा से अनुमति लेकर मिगसर शुदी १० को संयम-पथ ग्रहण करते हैं। संयम-पथ पर आरूढ़ होने के पश्चात् ज्ञान प्राप्त करने के पूर्व तक १२ वर्ष ६ महीने और १५ दिन तक अनेकों गोपालक का, शूलपाणि का, चन्डकौशिक का, गोशालक का, संगम देव का, लोहकार का, गोपालक द्वारा कानों में कीलें ठोंकने का, कटपूतना व्यंतरी-आदि के उपसर्ग सहन करते हुए एक अत्युत्कट अभिग्रह धारण करते हैं, जिसकी पूर्ति चन्दन बाला द्वारा होती है। अन्त में भगवान की सम्पूर्ण तपो-राशि का उल्लेख किया गया है।

पाँचवीं पूजा में श्रमण महावीर को वैशाख शुक्ला दशमी को कैवल्य की प्राप्ति होती है। देवताओं द्वारा समवसरण की रचना की जाती है। भगवान अपने उपदेशों द्वारा यज्ञादि हिंसा-कृत्यों को बन्द कर अहिंसा और सत्य धर्म का प्रचार करते हुए चतुर्विध संघ की स्थापना करते हैं। विश्व को अपना अनुपम सन्देश सुनाते हैं। सर्वज्ञ, सर्वदर्शिता के गुणों को प्रकट किया गया है।

छठीं पूजा में कार्तिक कृष्णा अमावास्या (दीपावली) को श्रमण भगवान महावीर शेष कर्मों का क्षयकर, अजर, अमर, अक्षय,

अपुनर्भव हो जाते हैं। प्रधान शिष्य गौतम को महावीर के विरह में अत्यन्त दुःख होता है। अन्त में विशुद्ध अध्यवसायों पर चढ़ते हुए केवलज्ञान को प्राप्त करते हैं।

कलश में लेखक ने छह कल्याणकों को परम मंगलकारी दिखाते हुए अपनी गुरुपरम्परा का, संवत् का और स्थान का उल्लेख किया है।

इस प्रकार देखा जाय तो इन छः पूजाओं में श्रमण भगवान महावीर का संक्षेप में समग्र जीवन-चरित्र ही आ गया है।

प्रकाशन का इतिहास

गत वर्ष मेरा चातुर्मास बम्बई पायधुनी स्थित महावीर स्वामी के देरासर में था। उस समय भायखला निवासी भाई अचरत-लाल शिवलाल शाह ने छह कल्याणक की पूजा बनाने का अनेकों बार आग्रह किया था, लेकिन संयोग वश उनकी इच्छा की पूर्ति उस समय मैं नहीं कर सका था। इस वर्ष भी अपने कई मित्रों एवं सहयोगियों का आग्रह रहा कि रचना की ही जाय। उसी प्रेम पूर्ण आग्रह के वशीभूत होकर यह पूजा बनाई गई है। इस पूजा की भाषा अत्यन्त ही सरल रखी गई है, जिससे सामान्य पाठक भी इस पूजा का भाव हृदयगम कर सकें।

मेरे सुस्नेही उपाध्याय श्री कवीन्द्रसागरजी महाराज ने इसका संशोधन कर जो उदारता दिखलाई है उसके लिये मैं उनका अत्यन्त ही कृतज्ञ हूँ।

गेय रूप में मेरी यह प्रथम कृति ही होने के कारण निसंदेह इसमें अनेकों त्रुटियाँ होंगी, उन्हें विज्ञगण सुधारने का प्रयत्न करेंगे।

२२-३-५६ — लेखक

कोटा (राजस्थान)

प्राक्कथन

महोपाध्याय श्री विनयसागरजी महाराज ने 'महावीर षट् कल्याणक पूजा' की रचना कर जैन पूजा साहित्य में एक प्रशंसनीय अभिवृद्धि की है। गत चार सौ वर्षों से इस प्रकार की पूजाओं का बोलचाल की भाषा में प्रचार बढ़ा और सैकड़ों की संख्या में ऐसे साहित्य का निर्माण हुआ। इससे दो प्रकार के लाभ मिले। एक तो भवसमुद्र निस्तारिणी तीर्थंकर-भक्ति और दूसरे में एतद्विषयक गंभीर शास्त्रीय ज्ञान का देशी भाषाओं में सुगमता पूर्वक हृदयङ्गम करने का सरल साधन। यह पूजा तो प्रकारान्तर से भगवान महावीर का विशुद्ध जीवन चरित्र ही है; जो श्वेताम्बर जैनागमों द्वारा पूर्णतया समर्थित है। इसका षट् कल्याणक शब्द शायद कुछ बन्धुओं को न जँचता हो, पर है वह अवश्य ही सत्य; फिर भले ही क्यों न वह आश्चर्य-भूत माना जाता हो। आचाराङ्ग, स्थानाङ्ग, समवायाङ्ग, कल्पसूत्र और पंचाशक आदि जैनागम पाँचों मंगलकारी कल्याणकों को उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में मानते हैं। छट्ठा निर्वाण कल्याणक स्वाति नक्षत्र में हुआ जिसे माने बिना कोई चारा नहीं। आत्मार्थियों को निष्पक्षता पूर्वक यह तथ्य मानने में आना कानी नहीं होनी चाहिए कि देवानंदा ब्राह्मणी की कुक्षि में आना तो कल्याणक

है फिर त्रिशलामाता की कुक्षि में आगमन अकल्याणक कैसे हो सकता है? इसी कल्याणक के चतुर्दश महास्वप्नादि उतारने की सारी क्रियाएँ मान्य करते हुए मात्र कल्याणक शब्द अमान्य करने का हठाग्रह क्यों?

इस पूजा के निर्माता महोपाध्याय श्री विनयसागरजी म० साहित्याचार्य, दर्शन शास्त्री, साहित्यरत्न और शास्त्र-विशारद हैं। आपने तरुणवय में एकनिष्ठ अध्ययन द्वारा परीक्षाएं पास करके ये उपाधियाँ प्राप्त की हैं। आपका काव्य निर्माण का यह प्रथम प्रयास है फिर भी प्रसाद गुण युक्त, आधुनिक तर्जों में, सुन्दर शब्द योजना द्वारा आपने भक्त-जनों को जो प्रसादी दी है: वस्तुतः अभिनन्दनीय है। आप जैसे उदीयमान रत्न से हमें बड़ी बड़ी आशाएं हैं। शासन-देव से प्रार्थना है कि आप दीर्घायु हों और अपनी विद्वत्ता द्वारा जैन-वाङ्मय और राष्ट्र भाषा हिन्दी का भण्डार भर-पूर करते रहें।

भँवरलाल नाहटा

नमो नमः श्रीजिनमणिसागरसूरिपादपद्मेभ्यः ।

महावीर-षट्-कल्याणक-

पूजा।

प्रथम च्यवन कल्याणक पूजा।

सिद्ध बुद्ध शिवकर विभो, सर्व हितावह देव ।
श्रमण तीर्थपति हे प्रभो, महावीर जिन देव ॥
वर्धमान जितरिपु नमुं, वर्धमान गण देव ।
सुमति सिन्धु गुरु गणि-मणि, करों प्रणति सह सेव ॥
श्रुत देवी प्रणमूं सदा, वीणा धारिणी देवि ।
षट् कल्याणक पूजना, वर्णन करूँ चित सेवि ॥

(राग सिद्धचक्र पद वन्दो)

कल्याणक गुणधारी, वन्दो महावीर अवतारी ।
वार वार बलिहारी वन्दो महावीर अवतारी ॥ टेर ॥
पहिले भव नयसार विवेकी, साधु सेवा भावे ।
समकित गुण पावें भव गिनती, तब ही से प्रभु पावें ॥ वन्दो. १॥

मरिचि भव में चक्री वन्दन, वाणी सुने अभिमाने ।
नीच गोत्र करमदल बांधे, वीर भवे दय ठाने ॥ वन्दों.२॥
नंदन भव में मासखमण से, लाख वरस तप योगी ।
वीस स्थानक आराधन से, तीर्थंकर पद भोगी ॥ वन्दों.३॥
प्राणत देवलोक से च्यवकर, सत्तावीसम भव में ।
प्रभु पधारे शासन स्वामी, कल्याणक जीवन में ॥ वन्दों.४॥
ब्राह्मणकुंड ऋषभदत्त ब्राह्मण, देवी देवानंदा ।
चौद सुपन देखे तब तन-मन में होवे परमानंदा ॥ वन्दों.५॥
जागृत हर्षित देवानंदा, प्रियतम पास पधारी ।
स्वामी ! सुपने देखे मैंने, क्या फल हो हितकारी ? ॥ वन्दों.६॥
वेद पुराण ब्राह्मण परिव्राजक, मत शासन विज्ञानी ।
होगा पुत्र मनोहर तेरे, जग जीवन कल्याणी ॥ वन्दों.७॥
श्रवण मनन कर मन हर्षानी, देवानन्द सयानी ।
च्यवन कल्याणक प्रभु की पूजा, करते विनय विधानी । वन्दों.८।

(मन्त्रम्)

सार्वीयमीश्वरमनन्तहितावहं श्री
सिद्धार्थवंशगगनाङ्गणपूर्णचन्द्रम् ।
सर्वज्ञ-देव-त्रिशलात्मज- वर्धमानं
सद्द्रव्यभावविधिना सततं यजेऽहम् ।

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय महावीरषट्कल्याणकपूजायां प्रथम च्यवनकल्याणके अष्टद्रव्यं निर्वपामिते स्वाहा ।

इति प्रथम कल्याणक पूजा ।

द्वितीय गर्भापहार कल्याणक पूजा

—दोहा

देवानन्दा कुक्षि में, देख विभु को इन्द्र ।
मन में संशय होत है, राहु देखि जिम चंद्र ॥१॥
नीच गोत्र विपाक से, यह आश्चर्य अयोग ।
समाचार है, क्यों न करूँ ? प्राप्त पुण्य संयोग ॥२॥

(लय जादूगर सैयां छोड़ मेरी बइयां ......फिल्म 'नागिन')

इन्द्र आज्ञा से, हरिनैगमेषी, आकर मर्त्यलोक गर्भसंहरण किया ।
देवा का रत्न त्रिशला कुक्षि में, त्रिशला का देवा कुक्षि गर्भसंक्रमण किया

आश्विन कृष्णा त्रयोदशी, मध्य रात्रि के मांहि ।
दिवस तिरासीवें आये विभुवर, त्रिशला कुक्षि मांहि ॥
यह आश्चर्य महान् । गर्भ० १ ।

चउदह सुपने देखे माता, जीताचार हुआ है ।
इसीलिये यह द्वितीय कल्याणक, मंगलकारी कहा है ॥
अपहरण है मंगलधाम । गर्भ० २ ।

कतिपय विज्ञ गर्भहरण को, कहते अमंगलरूप हैं ।
वे विज्ञ नहीं पर विज्ञंमन्य हैं, शास्त्रदृष्टि से दूर हैं ॥
संकीर्ण वृत्ति गंभीर । गर्भ० ३ ।

आचारं, स्थान, समवाय, कल्प—आदि सूत्र दर्शाते ।
गणधर, श्रुतधर, पूर्वाचार्य, कल्याण रूप बतलाते ॥
मंगलकारी महान् । गर्भ० ४ ।

दोहा

ज्योतिषी गण दैवज्ञ गणी, भूपति लीन्हे बुलाय ।
स्वप्न गुणन फल-पुत्र-सुनि, हर्ष न हृदय समाय ॥१॥
सिद्धि अभिवृद्धि सकल, नित नव प्रकटे जोत ।
त्रिशला श्री सिद्धार्थ के, सफल मनोरथ होत ॥२॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि सब, प्रकटे छण-छण माहि ।
पुण्य नगर महाराजगृह, आनन्द नहीं समाहिं ॥३॥
पूर्ण मनोरथ जब हुए, तबहिं विचारे भूप ।
वर्धमान प्रिय राखि हों, यथा नाम गुण रूप ॥४॥

(लय गजल -उठ जाग मुसाफिर भोर भयो०)

प्रभु देखि उदर दुख जननी के, झट निश्चलता अपनाते हैं ।
माँ को आशंका होती है, संशय चिहुं दिशि मँडराते हैं ।१।
क्या दैव हुए प्रतिकूल मेरे, क्यों झंझावात वहाते हैं ।
मेरी शान्ति की दुनिया में, विक्षोभ-अग्नि सुलगाते हैं ।२।
क्या पूर्व-जन्म के कृत कर्म से, प्रतिकार खड़ा बदला लेने ।
हे दैव ! आज क्यों रूठ गये, संसार लगा है दुख देने ।२।

दैवों ने छीना क्यों मुझसे, अपहरण हुआ सब कुछ मेरा।
पलटी प्रभुता इक पल-छिन में, झट चंचल रूप बनाते हैं।४।
जननी की आकुलता विलोकि, प्रभु चेतन-गति दर्शाते हैं।
ममतामयि की ममता लखकर, कर्त्तव्यरूढ हो जाते हैं।५।
प्रण किया प्रभु ने हैं जब तक, पितु मातु हमारे दुनिया में।
दीक्षा नहीं ग्रहण करूँ तब, तक दृढ़ टेक रेख बन जाते हैं।६।
माता मन हर्षित प्रेम पुलक, सुख रोम-रोम छा जाता है।
आनन्द रूप प्रभु का प्रतिदिन, प्रति पल आनन्द बढ़ाता है।७।

(मन्त्रम्)

सार्वीयमीश्वर मनन्त-हितावहं श्री-
सिद्धार्थवंश गगनांगण -पूर्णचन्द्रम्।
सर्वज्ञ-देव-त्रिशलात्मज वर्धमान
सद्द्रव्य-भावविधिना सततं यजेऽहम्।

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय महावीरषट्कल्याणकपूजाया द्वितीय-गर्भापहार-कल्याणके अष्टद्रव्यं निर्वपामिते स्वाहा।

इति द्वितीय कल्याणक पूजा।

तृतीय जन्म कल्याणक पूजा

दोहा

चैत्र शुक्ल तेरस तिथि, मधु ऋतु आधी रात ।
नवें मास जिन अवतरे, शुभ दिन साढे सात ॥१॥
हस्तोत्तर नक्षत्र था, नव वसन्त लहरात ।
जग विभोर था प्रेम में, प्रभुता प्रभु विकसात ॥२॥

(लय: मधुर-मधुर बाजे धुनि......)

नगर नगर, डगर-डगर, बाजतीं बधाइयाँ ।
देव देवलोक छोडि, देवरानि धाइयाँ ॥ नगर. १ ॥
आज क्षत्रि कुण्ड ग्राम, पुण्य धाम पाइयाँ ।
दिग्कुमारि देवियों ने, सूतिकर्म रचाइयाँ ॥ नगर. २ ॥
देवराज अहो भाग्य, मेरु शैल आइयाँ ।
ले गये प्रभु उठाय, महोत्सव मनाइयाँ ॥ नगर. ३ ॥
सुनत ही बधाई वेगि, नृप उछाह पाइयाँ ।
धन्य-धन्य भाग्य मेरे, ऐसो सुत जाइयाँ ॥ नगर. ४ ॥
कौस्तुभ, वैडूर्य पीत, नील मणि लुटाइयाँ ।
स्वर्ण-रजत कौन कहे, इच्छा भर पाइयाँ ॥ नगर. ५ ॥
दिवस दसों दिशि आज, आनन्द बधाइयाँ ।
मंत्र मुग्ध जननि-जनक, स्वर्गिक छवि छाइयाँ ॥ नगर. ६ ॥
ज्ञात जन बुलाय लीन्ह, षट् रस जिमाइयाँ ।
वर्धमान नाम राखि, हृदय से लगाइयाँ ॥ नगर. ७ ॥

दोहा

चन्द्र कला सों अहर्निश, वर्धित श्री वर्धमान ।
आमलिकी क्रीड़ा करत, शीश मुष्टि दे तान ॥१॥
छली देव की छल क्रिया, जाने जब भगवान ।
महावीर तब नाम कहि,पायो समकित दान ॥२॥

(लय ओ पंछी बावरिया)

नन्दी वर्धन बन्धु, बहिन श्री सुदर्शना ।
तरुणकेलि रसवेलि, एक संग खेलना ॥
समरवीर की पुत्री यशोदा, कुँवर प्राप्त कर हुई प्रमोदा ।
जीवन अर्पण करके, करे तब सेवना ॥ नं. १॥

सुख के दिन बीते मंगलमय, प्रेम प्रवाह थाह नहीं निश्चय।
जनमी शक्ति अनूप- रूप प्रिय दर्शना ॥ नं. २॥

मात-पिता स्वर्गस्थ हुए जब, पूर्ण प्रतिज्ञा जान प्रभू तब ।
आये बन्धु के पास, करें यह याचना ॥ नं. ३॥

भाई अब आज्ञा दो मुझ को, धारण करलूँ संयम व्रत को।
विश्व तारक बन जाऊँ यही मम भावना ॥ नं. ४॥

ज्येष्ठ बन्धु द्रवीभूत हो बोले, पलक मूँद मनके दृग खोले।
भैया त्याग न जाओ रहो मम कामना ॥ नं. ५॥

भूला नहीं दुख मात-पिताका,तोड़ रहे क्यों मुझ से नाता।
जख्म नये पर नये नमक नहीं डारना ॥ नं. ६॥

करो निवास वर्ष दो प्रियवर, अनुमति दो तुम हर्षित होकर।
दया की भीख मैं चाहूँ बन्धुवर याचना ॥ नं. ७॥
वर्धन की ममता को निरखकर, अनुमति दी अपना प्रण खोकर।
गेह निभाऊँ तुम्हरा वर्ष दो चाहना ॥ नं. ८॥
दर्शन, ज्ञान, चरित की धारा, बहे त्रिपथगामिनि अविकारा।
गृह में भी रहे तपस्वी यह कैसी साधना ॥ नं. ९॥

(मन्त्रम्)

सार्वीय-मीश्वर-मनन्त-हितावहं श्री
सिद्धार्थवंशगगनांगणपूर्णचन्द्रम् ।
सर्वज्ञ-देव-त्रिशलात्मज वर्धमान
सद्द्रव्यभावविधिना सततं यजेऽहम् ।

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय महावीरपट्कल्याणकपूजायां तृतीय जन्म कल्याणके अष्टद्रव्य निर्वपामिते स्वाहा ।

इति तृतीय कल्याणक पूजा ।

चतुर्थ दीक्षा कल्याणक पूजा

दोहा

अनायास प्रकटे पुनि, श्री लोकान्तिक देव ।
प्रभु से बोले विनत हो, सहज कृपालु सदैव ॥१॥
एक वर्ष अब बीत चुका, प्रभु कीजे तत्काल ।
धर्म-चक्र प्रवर्तना, मिटे जगत जंजाल ॥२॥

❀ ❀ ❀

नीति निभाने के लिये, पहुँच यशोदा पास ।
कहा वीर ने हे प्रिये, विदा करो सोल्लास ॥३॥
प्रिय मुख से यह बात सुन, बोली वह मम प्राण ! ।
जाओ ! जाओ !! प्रेम से, करो विश्व-कल्याण ॥४॥

(लय सुनो सुनो हे दुनिया वालो……)

[१]

चले प्रभु धन धाम छोड़कर, संयम-व्रत के हो अनुरागी ।
वर्षी दान देकर के विभुवर, आज बने हैं स्वयं विरागी ॥
इन्द्र-इन्द्राणि, नगर नर नारी, उत्सव खूब मनाते हैं ।
पूजन-अर्चन करके प्रभु का, प्रेम-पुष्प बरसाते हैं ॥
चन्द्र प्रभा शिविका में बैठकर, ज्ञात खण्ड में आते हैं ।
अशोक तरु तर त्यागे सब कुछ, शिव स्वरूप बन जाते हैं ॥
मिगसर शुदी दसमी को प्रभुवर, संयम-पथ अपनाते हैं ।
अपनाकर बन पूर्ण यमी वे, मन पर्यव वर पाते हैं ॥ चले०

[२]

भूपति वर्धन की अनुमति से, वीर वहां से निकल पड़े ।
सन्ध्या समय वृक्ष के नीचे, ध्यानावस्थित रहे खड़े ॥
उसी समय ग्वाला इक आकर, बैल सौंपकर उन्हें चला ।
जब लौटा तब बैल नहीं थे, क्रोध अग्नि में भुना जला ॥
रस्सी लेकर चला मारने, इन्द्र ने आकर रोक लिया ।
शिक्षा उसको देकर उसने, वीतराग से अर्ज किया ॥
विभो ! आपके हर संकट में, आज्ञा हो तो साथ रहूँ ।
अंगीकार न किया वीर ने, कहा स्वयं निज बाँह गहूँ ॥ चले०

[३]

मोराक सन्निवेशाश्रम में विभु, दूईजन्ते के पास गये ।
सुहृद-पुत्र को भेंटा ऋषि ने, वीर प्रेम में मग्न भये ॥
पन्द्रह दिवस बिताकर विभुवर, अस्थि ग्राम में आते हैं ।
शूलपाणि सुर के मन्दिर में, भी इक रात बिताते हैं ॥
उसी रात में शूलपाणि सुर, ऊधम बहुत मचाता है ।
आखिर थक कर हार-हार कर, क्षमा माँगकर जाता है ॥ चले०

दोहा

सोमभट्ट पितु-मीत जब, पहुँचा दीन शरीर ।
माँगा तब प्रभु ने दिया, देव दुष्य निज चीर ॥१॥
चंडकोशिया साँप ने, डसा वीर-पद एक ।
शिक्षा पाई, तन तजा, यों गति पाइ नेक ॥२॥

(लय अम्बिका विरुद बखाने : मात्रा ७)

महिमा को न पिछाने, प्रभु तव महिमा को न पिछाने।
गोशालक था महा पातकी, अवरणवादी तुम्हारा।
तेजोलेश्या से जलते बचाया, पर दुर्जन कब माने। प्रभु.१।
संगम देव महा अपकारी, नीच उपद्रवकारी।
इक यामिनी में बीस उपद्रव, अतिहु भयंकर कीने। प्रभु.२।
स्थान-स्थान पर अपमानित कर, तस्कर दोष लगाये।
अशन पान से वंचित करके, छः महीने दुख दीने। प्रभु.३।
आखिर में हत हार मान कर, चरणन गिरा तुम्हारे।
ऐसे निर्दय पापी प्रलोभी, क्षमा प्रदान की तुमने। प्रभु ४।
वैशाली लोहकार शाला में, रहे अटल प्रभु ध्याने।
लोहकार ने अशुभ मानकर, लौह घन बरसाने। प्रभु.५।
एक गोपालक महा कृतघ्नी, वैर पूर्व भव ठाने।
श्रवण-रन्ध्रों में कील ठोक कर, अति पीड़ा पहुंचाने। प्रभु.६।
खरक वैद्य ने कील काढकर, स्वस्थ किया क्षण माहिं।
व्यंतरी इक कटपूतना नामा, शीतोपसर्ग कीने। प्रभु.७।
अपकारी पर भी उपकारी, चेतोदार मनस्वी।
समकित स्वर्ग मुक्ति के दाता, गौरव कौन बखाने। प्रभु.८।

दोहा—

कर्म निर्जरा के लिये, विचरे म्लेच्छ प्रदेश।
महा भयंकर कष्ट सहि, दहे कर्म अनिमेष॥१॥

श्रमण तपस्वी ने किया; उग्र अभिग्रह एक ।
पूर्ण न हो तब तक सदा, निराहार रहूं टेक ॥२॥

(लय गजल : झिंझोटी)

अति सुकुमारी राजकुमारी, कारागार निवासी हो । टेर ।
सिर मुण्डित पग में हो बेड़ी, दिवस तीन उपवासी हो ।
रुदन करत हो ठाढ़ि देहली, दान बाकुला राशी हो । अति.१।
बीते पाँच मास दिन पच्चिस, कौशाम्बी प्रभु आते हैं ।
धनश्रेष्ठी के ठौर दधि सुता, चन्दन बाला पाते हैं । अति.२।
हुई प्रतिज्ञा पूर्ण वीर की, देव पुष्प बरसाते हैं ।
पञ्चदिव्य कर धूम धाम से, महिमा अधिक बढ़ाते हैं । अति.३।
दो छमासी, अरु नौ चौमासी, दो त्रिमासि, दो अढ़ि मासी ।
छै दो मासी, डेढ़ मासी दो, पक्ष बहत्तर तप राशी । अति.४
साढ़े बारह बरस, पक्ष भर, छद्मस्थ काल बिताते हैं ।
उग्र तपस्वी तप बल द्वारा, कर्म नाश कर पाते हैं । अति.५।

(मन्त्रम्)

सार्वीयमीश्वर मनन्त-हितावहं श्री
सिद्धार्थवंश-गगनाङ्गण-पूर्णचन्द्रम् ।
सर्वज्ञ देव त्रिशलात्मज वर्धमानं
सद्द्रव्य-भावविधिना सततं यजेऽहम् ।

ॐ ह्रीँ परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय महावीरषट्कल्याणकपूजायां चतुर्थ-दीक्षा-कल्याणके अष्टद्रव्यं निर्वपामिते स्वाहा ।

इति चतुर्थ कल्याणक पूजा ।

पंचम केवल-ज्ञान कल्याणक पूजा

दोहा—

नदी तीर ऋजु वालुका, शाल तरुतर आन।
शुदि दसमो वैसाख मह, पायो केवल ज्ञान॥१॥
घन घाती चौकर्म का, क्षय कर हे सरताज।
सर्वदर्शी सर्वज्ञ तुम, आज बने जिनराज॥२॥

(लय—होई आनन्द बहार रे ....)

आज आनन्द दिगन्त रे, पूजो भक्ति प्रेम से। टेर।
इन्द्रादिक सुर सुरी मिलकर, समवसरण विरचात रे। पूजो.१।
चौतीस अतिशय पैंतीस वाणी, शोभित श्री वर्धमान रे। पूजो.२।
समवसरण में बैठ प्रभु जी चउविह धर्म प्रकाश रे। पूजो.३।
इन्द्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति, व्यक्त, सुधर्मा आर्य रे। पूजो.४।
मण्डित, मौर्यपुत्र, अकम्पित, अचलभ्राता, मेतार्य रे। पूजो.५।
प्रमुख-प्रभास विप्रवर वैदिक, छात्र सहित परिवार रे। पूजो.६।
वैदिक तत्त्व विवेचन करके, बना दिये अनगार रे। पूजो.७।
शासन के महा स्तम्भ बनाकर, गणधर पदवी दीनी रे। पूजो.८।
चन्दन बाला आदि साध्वी, दीक्षित कर जिनराज रे। पूजो.९।
चउविह संघ की स्थापना करके, तीर्थंकर पद पाय रे। पूजो.१०।
देश विदेशमें, ग्राम-नगरमें, फिर-फिर किया प्रचार रे। पूजो.११।
यज्ञ कांड हिंसा कृत्य बंदकर, अहिंसा ध्वज फहराय रे। पूजो.१२।

(लय—मालकोस)

वीतराग विभु अन्तर्यामी।

घट-घट वासी हे करुणाकर!
दीन दयालो! आनन्द घन हे!
सत्य स्वरूपी, जगदानन्दी,
निर्भयकारी, सच्चिदूघन हे!
वीतराग विभु अन्तर्यामी॥१॥

विश्व प्रेम का पाठ पढ़ाकर,
सत्य, अहिंसा, मर्म सिखाकर,
"साम्यवाद" की करके रचना,
विश्व शृङ्खलाकारी जय हे!
वीतराग विभु अन्तर्यामी॥२॥

निर्भय, निर्मोही बनने का,
अनासक्त, निस्पृह रहने का,
कर्मठ, धर्मवीर, वैरागी,
आत्म-शक्ति के सन्देशक हे!
वीतराग विभु अन्तर्यामी॥३॥

(मन्त्रम्)

सार्वीयमीश्वर ।।नन्त-हितावहं श्री
सिद्धार्थवंश-गगनांगण-पूर्णचन्द्रम् ।

सर्वज्ञ--देव त्रिशलात्मज वर्धमानं
सद्द्रव्य-भावविधिना सततं यजेऽहम् ।

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय महावीरषट्कल्याणकपूजाया पंचम-केवलज्ञान-कल्याणके अष्टद्रव्यं निर्वपामिते स्वाहा ।

इति पंचम् कल्याणक पूजा ।

षष्ठ निर्वाण कल्याणक पूजा

दोहा

तीस वर्ष गृह वास के, संयम बैंतालीस ।
पूर्ण आयु प्रभु पार करि, मुक्ति लहे जगदीश ॥१॥

❀ ❀ ❀

अस्थिग्राम इक जानिये, चम्पा नगरी तीन ।
वैशाली वाणिज्य में, बार चउमासी कीन ॥२॥

चउदह नालन्दा किये, छः मिथिला में जान ।
द्वय चउमासी भद्रिका, आलम्भिका इक मान ॥३॥

श्रावस्ती अरु म्लेच्छ भूमि, इक-इक चउमासी ठाय ।
मध्यम पापा अन्त में, आये श्री जिनराय ॥४॥

(लय झट जावो चन्दन हार लावो ······)

जिन स्वामी, महावीर नामी, परम पद पाते हैं ।
करि कर्मों का अंत, चले मुक्ति के पंथ, मन भाते हैं ॥

❀ साखी ❀

निर्वाण-समय निज जानकर, अखण्ड देशना देत ।
गौतम को करके पृथक, देखो सिद्धि-वधू वर लेत रे—
अमर बन जाते हैं ॥ जिन० १॥

❀ साखी ❀

कार्तिक कृष्ण अमावस, स्वाति नखत में प्राण ! ।
देह त्याग त्यागी चले, कर विश्व-जीवन कल्याण रे—
अक्षय कहलाते हैं ॥ जिन० २॥

❀ साखी ❀

अचल, अरुज, अविनश्वर, ज्योति स्वरूप अनन्त ।
अनन्त ज्ञानी दर्शनी, मङ्गल रूप सुसन्त रे—
मुक्ति पद पाते हैं ॥ जिन० ३॥

❀ साखी ❀

देख छठे कल्याण को, दुखी हुए सब देव ।
कौन हरे तम—पुञ्ज अब, कहन लगे तब देव रे—
अश्रु बरसाते हैं ॥ जिन० ४॥

❀ साखी ❀

सुनकर मुख से देव के, महावीर निर्वाण ।
दुखित हुए गौतम तभी, कर वीर प्रभु का ध्यान रे—
मन में बसाते हैं ॥ जिन० ५॥

❀ साखी ❀

तज संकल्प—विकल्प सब, गुण श्रेणी चढ़ जायँ ।
कर्मों को निर्मूल कर, कैवल्य ज्ञान को पायँ रे—
देव हर्षाते हैं ॥ जिन० ६॥

(मन्त्रम्)

सार्वीय-मीश्वर-मनन्त-हितावहं श्री
सिद्धार्थवंशगगनांगणपूर्णचन्द्रम् ।
सर्वज्ञ-देव – त्रिशलात्मज – वर्धमानं
सद्द्रव्यभावविधिना सततं यजेऽहम् ।

ॐ ह्रीँ परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय महावीरषट्कल्याणकपूजायां षष्ठ-निर्वाण कल्याणके अष्टद्रव्यं निर्वपामिते स्वाहा ।

इति षष्ठ कल्याणक पूजा ।

❀ कलश ❀

(लय—खरोता कहां मूल आये..........)

महावीर जिनवर की पूजा है सुखकारी ।
दर्शन की बलिहारी ॥ टेर ॥

वीर विभु के षट्कल्याणक, शास्त्र सिद्ध हैं भाई ।
परम पवित्र परम फलदायक, जग के मङ्गलकारी ॥ पूजा. १ ॥

शासन के महास्तम्भ गणों में, खरतरगच्छ आचारी ।
सुखसागर भगवानसागरजी, हुये परम उपकारी ॥ पूजा. २ ॥

सुमतिसिन्धु मम दादा गुरुवर, महोपाध्याय पदधारी ।
तासु पट्टधर विशद यशस्वी, शास्त्र धुरन्धर भारी ॥ पूजा. ३ ॥

'कल्याणक' 'पर्यूषण' 'साध्वी' व्याख्यान निर्णयकारी ।
सूरिवर श्री जिन मणिसागर, गण के परमाधारी ॥ पूजा. ४ ॥

तत्पदरेणु महोपाध्याय, साहित्याचार्य कहाये ।
श्यामासूनु विनयोदधि ने, पूजा रची मनुहारी ॥ पूजा. ५ ॥

हिन्द संवत्सर आठ, इन्दु दिन, पन्द्रह अगस्त मँझारी ।
दो हजार द्वादस भादों की, कृष्ण त्रयोदशी सारी ॥ पूजा. ६ ॥

महासमुन्द नगर अति सुन्दर, जहँ श्री शान्ति विराजे ।
संघ चतुर्विध शासन सेवी, वर्ते जय जयकारी ॥ पूजा. ७ ॥

ॐ आरती ॐ

ॐ जय महावीर विभो !

शरणागत के रक्षक, तारक भव सिन्धो ! ॥१॥

पावापुरी है तीर्थधाम प्रभु, जेसलमेर मंडन ! ।

कन्याणा साँचोर नॉडिया, उपकेशपुर भूषण ॥ ॐ.२॥

च्युति गर्भ हरण जन्म अरु दीक्षा, केवल निर्वाणी ।

षट्कल्याणक वीर तुम्हारे, यह आगम वाणी ॥ ॐ.३॥

श्री श्रीमाली मेघराजजी, महासमुन्द वासी ।

प्रेरक हैं प्रिय इस आरती के, हे घट-घट वासी ! ॥ ॐ.४॥

आरती जो यह गावें भवि जन, वंछित फल पावें ।

स्वर्ग मोक्ष फल पाकर के वे, धन-धन हो जावें ॥ ॐ.५॥